अध्याय
02

दो धुर्वीयता का दौर

परिचय

- इस अध्याय में हम सोवियत संघ के विघटन एवं उससे हुए परिणाम के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे।
- शीत युद्ध के सबसे गर्म दौर में बर्लिन की दीवार खड़ी की गई थी और यह दीवार शीत युद्ध का सबसे बड़ा प्रतीक थी।
- यह दीवार पूर्वी और पश्चिमी खेमे के बीच विभाजन का प्रतीक थी
- यूरोप महाद्वीप में जर्मनी देश की राजधानी बर्लिन थी।
- शीत युद्ध के प्रतीक 1961 में बनी बर्लिन की दीवार को 9 नवंबर 1989 को जनता द्वारा तोड़ दिया गया
- यह दीवार 28 वर्षों तक खड़ी रही तथा यह 150 किलोमीटर लंबी थी।

सोवियत संघ (U S S R)

- 1917 की रूसी बोल्शेविक क्रांति के बाद समाजवादी सोवियत गणराज्य संघ अपने अस्तित्व में आया।
- सोवियत संघ में कुल मिलाकर 15 अलग-अलग देशों को मिलाकर सोवियत संघ का निर्माण किया गया था।
- सोवियत संघ का निर्माण गरीबों के हितों को ध्यान में रखते हुए किया गया था। इससे समाजवाद और साम्यवादी विचारधारा के अनुसार बनाया गया था।
- a. रूस b. यूक्रेन c. जॉर्जिया
d. बेलारूस e. उज़्बेकिस्तान f. आर्मेनिया
g. अज़रबैजान h. कजाकिस्तान
i. कीर्गीस्तान j. मल्डोवा k. तुर्कमेनिस्तान
l. लताविया m. लिथोनिया n. एस्टोनिया

सोवियत प्रणाली

- सोवियत संघ में समतावादी समाज के निर्माण के लिए केंद्रीय योजना, राज्य के नियंत्रण पर आधारित और साम्यवादी दल द्वारा निर्देशित व्यवस्था सोवियत प्रणाली कहलाएगी।
- दूसरे शब्दों में सोवियत प्रणाली वह व्यवस्था है जिसके द्वारा सोवियत संघ ने अपना भरपूर विकास किया।

© JCERT not to be republished

सोवियत प्रणाली की विशेषताएं

- सोवियत प्रणाली पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध तथा समाजवाद की आदत से प्रेरित थी
- सोवियत प्रणाली में नियोजित अर्थव्यवस्था थी
- सोवियत प्रणाली में कम्युनिस्ट पार्टी का दबदबा था
- इसमें न्यूनतम जीवन स्तर की सुविधा बेरोजगारी ना होना था
- इसकी और एक विशेषता अच्छी संचार प्रणाली थी
- इसमें मिल्कियत का प्रमुख रूप राज्य का स्वामित्व था
- इस प्रणाली में उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण था

दूसरी दुनिया के देश

पूर्वी यूरोप के देशों को समाजवादी प्रणाली की तर्ज पर डाला गया था, इन्हें ही समाजवादी खेमे की देश या दूसरी दुनिया कहा जाता था।

साम्यवादी सोवियत अर्थव्यवस्था तथा पूंजीवादी अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अंतर

A. सोवियत अर्थव्यवस्था

- राज्य द्वारा पूर्ण रूपेण नियंत्रित
- योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था
- व्यक्तिगत पूंजी का अस्तित्व नहीं
- समाजवादी आदर्शों से प्रेरित

B. अमेरिका की अर्थव्यवस्था

- राज्य का न्यूनतम हस्तक्षेप
- स्वतंत्र आर्थिक प्रतियोगिता पर आधारित
- व्यक्तिगत पूंजी की महत्व
- अधिकतम लाभ के पूंजीवादी सिद्धांत

मिखाईल गोर्वाचेव

1980 के दशक में मिखाईल गोर्बाचेव ने राजनीतिक सुधारों तथा लोकतांत्रिकरण को अपनाया उन्होंने पुनर्रचना (पेरेस्गोइका) एवं खुलापन (ग्लासनोस्त) के नाम से आर्थिक सुधार लागू किए।

सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा

1991 ई में बोरिस येल्तसिन के नेतृत्व में पूर्वी यूरोप के देशों ने तथा रूस यूक्रेन एवं बेलारूस ने शुभ लक्षण की समाप्ति की घोषणा की। CIS (स्वतंत्र राष्ट्र का राष्ट्रकुल) बना एवं 15 नए देशों का उदय हुआ।

सोवियत संघ में कम्युनिस्ट शासन की कमियाँ

- सोवियत संघ पर कम्युनिस्ट पार्टी ने 70 सालों तक शासन किया और यह पार्टी अब जनता के जबाबदेह नहीं रह गयी थी।

© JCERT not to be republished

- कम्युनिस्ट शासन में सोवियत संघ प्रशासनिक और राजनीतिक रूप से गतिरूध् हो चुका था।
- यहाँ व्याप्त भ्रष्टाचार और गलतियों को सुधारने में शासन व्यवस्था अक्षम थी।
- इस विशाल देश में केंद्रीकृत शासन प्रणाली थी।
- सोवियत संघ में सत्ता का जनाधार खिसकता जा रहा था। कम्युनिस्ट पार्टी में कुछ तानाशाह प्रकृति के नेता भी थे जिनको जनता से कोई सरोकार नही था।
- यहाँ पार्टी के अधिकारियों को आम नागरिकों से ज्यादा विशेषाधिकार मिले हुए थे।

सोवियत संघ के विघटन के कारण

- सोवियत संघ के नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं किया जा सका।
- साम्यवादी प्रणाली पर वहां के नौकरशाही शासन का शिकंजा कसा हुआ था।
- सोवियत संघ मेंचले आ रहे कम्युनिस्ट पार्टी का बुरा शासन भी विघटन का एक प्रमुख कारण बना।
- उस समय सोवियत संघ ने अपना धन और संसाधन पूर्वी यूरोप में अधिक लगाया ताकि वे उनके नियंत्रण में बने रहे।
- इसी बीच लोगों को गलत जानकारी देकर भ्रमित किया गया कि सोवियत संघ विकास कर रहा है।
- सोवियत संघ ने अपने संसाधनों का अधिकतम प्रयोग परमाणु हथियारों को प्राप्त करने में किया।
- सोवियत संघ का प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे में पश्चिम के मुकाबले पीछे रहना भी विघटन का एक प्रमुख कारण बना।
- सोवियत संघ में कई सारे देश थे, लेकिन उन सब में रूस ही प्रमुख बना रहा, यह भी विघटन का एक प्रमुख कारण बना।
- सोवियत संघ में मिखाईल गोर्बाचेव द्वारा किए गए सुधारों का विरोध भी शुरू हो गया यह भी सोवियत संघ के विघटन का एक प्रमुख कारण बना।
- सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था में गतिरोध आ गई और जरूरी वस्तुओं की कमी होने लगी यह भी विघटन का कारण बना।
- सोवियत संघ में राष्ट्रवादी भावना और संप्रभुता की इच्छा का बढ़ना भी इसके विघटन का अनिवार्य कारण बना।
- सोवियत प्रणाली का सत्तावादी होना भी पार्टी का जनता के प्रति जवाबदेह नहीं होना, सोवियत संघ की विघटन का एक प्रमुख कारण बना।

सोवियत संघ के विघटन के परिणाम

- सोवियत संघ के विघटन का सबसे प्रमुख परिणाम यह हुआ कि शीतयुद्ध का संघर्ष समाप्त हो गया और दूसरी दुनिया का पतन हो गया।
- अब विश्व में एक ध्रुवीय विश्व अर्थात अमेरिकी वर्चस्व का उदय हुआ।

© JCERT not to be republished

- विश्व में हथियारों की होड़ समाप्त हो गई, सोवियत खेमे का अंत हो गया और 15 नए देशों का उदय हुआ।
- अब विश्व में विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएं ताकतवर देशों की सलाहकार बन गई।
- अब रूस सोवियत संघ का उत्तराधिकारी बना।
- इसके साथ अब विश्व राजनीति में शक्ति संबंध परिवर्तित हो गए।
- अब संसार में समाजवादी विचारधारा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा हो गया। अब पूंजीवादी उदारवादी व्यवस्था का वर्चस्व स्थापित हो गया।
- अब विश्व में शॉक थेरेपी को अपनाया गया।
- अब संसार में उदारवादी लोकतंत्र का महत्त्व पहले की अपेक्षा ज्यादा बढ़ गया।

भारत जैसे विकासशील देशों में सोवियत संघ के विघटन के परिणाम

- सोवियत संघ के विघटन के परिणाम स्वरूप अमेरिका को विकासशील देशों की घरेलू राजनीति में हस्तक्षेप का मौका मिल गया।
- अब संसार में कम्युनिस्ट विचारधारा को धक्का लगा।
- अब संसार में विश्व के महत्वपूर्ण संगठनों पर अमेरिकी प्रभुत्व बढ़ गया।
- सोवियत संघ के विघटन के परिणाम स्वरूप बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत तथा अन्य विकासशील देशों में अनियंत्रित रूप से प्रवेश की स्वतंत्रता मिल गई।

एक ध्रुवीय विश्व का बनना—

- सोवियत संघ के विघटन के पश्चात अब विश्व में एक ही महाशक्ति अमेरिका शेष रह गया।
- 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात एक ध्रुवीय विश्व की स्थापना हुई।
- अब संसार में अमेरिका को चुनौती देने वाला कोई देश शेष नहीं रह गया था।
- अब विश्व में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का बोलबाला हो गया क्योंकि समाजवादी अर्थव्यवस्था असफल हो गई थी।
- अब संसार में अमेरिका के सैन्य खर्च और सैन्य प्रौद्योगिकी की गुणवत्ता इतनी अच्छी हो गई थी, विश्व में दूसरा कोई भी अन्य देश इसे चुनौती नहीं दे सकता था।
- सोवियत संघ के विघटन के पश्चात अमेरिका का अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों पर भी वर्चस्व स्थापित हो गया।
- अमेरिका की जींस, कोक, पेप्सी आदि विश्व भर की संस्कृतियों पर हावी होते जा रहे थे।

विश्व में हथियारों की होड़ की कीमत

- सोवियत संघ ने विश्व में हथियारों की

© JCERT not to be republished

होड़ में अमेरिका को कड़ी टक्कर दी परंतु प्रौद्योगिकी और अन्य बुनियादी ढांचे के मामले में वह दूसरे पश्चिमी देशों से पिछड़ गया।

- विघटन के पश्चात सोवियत संघ उत्पादकता और गुणवत्ता के मामले में भी पश्चिमी देशों से बहुत पीछे रह गया।

शॉक थेरेपी

शॉक थेरेपी का शाब्दिक अर्थ है चोट पहुंचाकर उसका उपचार करना। साम्यवाद के पतन के पश्चात सोवियत संघ के गणराज्य को विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्देशित साम्यवाद से पूंजीवाद की ओर परिवर्तित की मॉडल को अपनाने कहा गया, इसे ही शॉक थेरेपी कहा जाता है।

शॉक थेरेपी की विशेषताएं—

- इसमें मिल्कियत का प्रमुख रूप निजी स्वामित्व था अर्थात राज्य की संपदा का निजी करण।
- अब सामूहिक फार्म को निजी फार्म में बदल दिया गया।
- अब पूंजीवादी पद्धति से कृषि की जाने लगी।
- अब मुक्त व्यापार व्यवस्था को अपनाया जाने लगा।
- मुद्राओं का आपसी परिवर्तन होने लगा।
- पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्था से जुड़ाव।
- अब पूंजीवाद के अतिरिक्त किसी भी वैकल्पिक व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया गया।

शॉक थेरेपी के परिणाम

- यह पूर्णतया असफल रहा, रूस का औद्योगिक ढांचा चरमरा के गिर गया।
- रूसी मुद्रा रुबल में गिरावट।
- समाज कल्याण की पुरानी व्यवस्था नष्ट हो गई।
- शॉक थेरेपी के परिणाम स्वरूप सरकारी रियायत खत्म हो गई और ज्यादातर लोग गरीब हो गए।
- शॉक थेरेपी के परिणाम स्वरूप 90% उद्योगों को निजी हाथों या कंपनियों को कम दामों में बेचा गया, जिससे इतिहास की सबसे बड़ी गराज सेल कहा जाता है।
- इसके परिणाम स्वरूप समाज में आर्थिक विषमता बढ़ी।
- देश में खाद्य संकट भी खड़ा हो गया।
- देश में माफिया वर्ग का उदय हुआ।
- अमीर और गरीब के बीच तीखा विभाजन हो गया।
- कमजोर संसद एवं राष्ट्रपति को अधिक शक्तियां प्राप्त हुई जिससे सत्तावादी राष्ट्रपति शासन लागू हुआ।

गराज सेल

- शॉक थेरेपी से उन पूर्वी एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई जिनमें पहले साम्यवादी शासन थी।
- सोवियत रूस में पूरा का पूरा राज्य नियंत्रित ढांचा चरमरा गया। लगभग 90% उद्योगों को निजी हाथों या कंपनियां को बेचा गया।

© JCERT not to be republished

- आर्थिक ढांचे का यह पुनर्निर्माण क्योंकि सरकार द्वारा निर्देशित नीति की बजाए बाजार की ताकतें कर रही थी इसलिए यह कदम सभी उद्योगों को समाप्त करने वाला साबित हुआ। इसी को इतिहास का सबसे बड़ी गराज सेल के नाम से जाना जाता है।

महत्वपूर्ण उद्योगों की कीमत कम से कम करके पहचानी गई और उन्हे सस्ते दामों मे बेचा गया।

हालांकि इस महा- बिक्री में भाग लेने के लिए सभी नागरिकों को अधिकार पत्र दिए गये थे, लेकिन अधिकांश नागरिकों ने अपने अधिकार पत्र कालाबाजारी लोगों के हाथों बेच दिए, क्योंकि उन्हें धन की बहुत ज्यादा जरूरत थी।

अब रूस की मुद्रा रूबल के मूल्य में आश्चर्यजनक रूप से गिरावट आने लगी मुद्रास्फीति इतनी ज्यादा बढ़ी कि लोगों की जमा पूंजी खत्म होने लगी।

संघर्ष एवं तनाव के क्षेत्र

पूर्व सोवियत संघ के अधिकांश गणराज्य संघर्ष की आशंका वाले क्षेत्र हैं। इन देशों में बाहरी ताकतों की दखलंदाजी भी बढ़ी है। रूस के दो गण राज्य चेचण्या और दागेस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले। चेकोस्लोवाकिया दो भागों में— चेक तथा स्लोवाकिया मैं बँट गया।

अरब स्प्रिंग

- 21वीं शताब्दी में पश्चिम एशियाई देशों में लोकतंत्र के लिए विरोध प्रदर्शन और जन आंदोलन प्रारंभ हुए ऐसे ही आंदोलनों को अरब स्प्रिंग के नाम से जाना जाता है।
- इसकी शुरुआत ट्यूनीशिया में 2010 में मोहम्मद बउजिजी के आत्मदाह से हुई।

विरोध प्रदर्शन के तरीके

- हड़ताल
- धरना
- मार्च
- रैली

विरोध का कारण

- जनता का असंतोष
- गरीबी
- तानाशाही
- मानव अधिकारों का उल्लंघन
- देश में फैली भ्रष्टाचार
- बढ़ती हुई बेरोजगारी

बाल्कन क्षेत्र

बाल्कन गणराज्य युगोस्लाविया गृह युद्ध के कारण कई प्रांतों में बँट गया। जिस में शामिल बोस्निया, हर्जे गोविना, स्लोवेनिया, मेसीडोनीया तथा क्रोएशिया ने अपने को आजाद कर लिया।

बाल्टिक क्षेत्र

बाल्टिक क्षेत्र के लिथुआनिया ने मार्च 1990 ईस्वी में अपने आप को स्वतंत्र कर लिया। उसके बाद एस्टोनिया, लताविया और

© JCERT not to be republished

लिथुआनिया 1991 ई में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बने। ये देश 2004 में नाटो में भी शामिल हुए।

मध्य एशिया

मध्य एशिया के तजाकिस्तान में 10 वर्षों तक यानी 2001 तक गृहयुद्ध चला था। 26.2 अज़रबैजान, आर्मेनिया, यूक्रेन, किर्गिस्तान, जार्जिया में भी गृहयुद्ध की स्थिति है। 26.3 मध्य एशियाई गणराज्यों में पेट्रोल की विशाल भंडार हैं। इस कारण से यह क्षेत्र बाहरी ताकतों और तेल कंपनियों के लिए प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा भी बन गया है।

पूर्व साम्यवादी देश और भारत

- पूर्व साम्यवादी देशों के साथ भारत के अच्छे संबंध है, रूस के साथ उसके संबंध तो बहुत ही अच्छे हैं।
- इन दोनों देशों का सपना बहु ध्रुवीय विश्व का बनाना है।
- ये दोनों देश परस्पर सह अस्तित्व, सामूहिक सुरक्षा, क्षेत्रीय संप्रभुता, स्वतंत्र विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों का वार्ता द्वारा हल, संयुक्त राष्ट्र संघ के सुदृढ़ीकरण तथा लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं।
- 2001 में भारत और सोवियत रूस द्वारा आपस में 80 द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर एवं भारत रूसी हथियारों का खरीददार बना।
- भारत द्वारा रूस से तेल का आयात, परमाणविक योजना तथा अंतरिक्ष योजना में रूस द्वारा मदद किया जाने लगा।
- कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के साथ ऊर्जा आयात बढ़ाने की कोशिश।
- गोवा में दिसंबर 2016 ईस्वी में हुए ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान रूस भारत के बीच हुए 17वें वार्षिक सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के बीच रक्षा, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अभियान समेत आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने एवं उनके लक्ष्यों की प्राप्ति पर बल दिया गया है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. सोवियत अर्थव्यवस्था की प्रकृति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(क) सोवियत र्अर्थव्यवस्था में समाजवाद प्रभावी विचारधारा थी।

(ख) उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व/नियंत्रण होना।

(ग) जनता को आर्थिक आजादी थी।

(घ) अर्थव्यवस्था के सर पहलू का नियोजन और नियंत्रण राज्य करता था।

उत्तर—(ग)

प्रश्न 2. निम्नलिखित को काल क्रमानुसार सजाएं—

(क) अफगान संकट

(ख) बर्लिन दीवार का गिरना

(ग) सोवियत संघ का विघटन

(घ) रूसी क्रांति

उत्तर—(क) रूसी क्रांति

(ख) अफगान संकट

(ग) बर्लिन दीवार का गिरना

(घ) सोवियत संघ का विघटन

प्रश्न 3. निम्नलिखित में कौन सा सोवियत संघ के विघटन के परिणाम नहीं है।

(क) संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच विचार धरात्मक लड़ाई का अंत

(ख) स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल का जन्म

(ग) मध्यपूर्व में संकट

उत्तर—(ग)

प्रश्न 4. निम्नलिखित में मेल कीजिए।

(1) मिखाईल गोरर्बाचेव	(क) सोवियत संघ का उत्तराधिकारी
(2) शाक थेरेपी	(ख) सैन्य समझौता
(3) रूस	(ग) सुधारों की शुरुआत
(4) बोरिस येल्तसिन	(घ) आर्थिक मॉडल
(5) वारसा	(ङ) रूस के राष्ट्रपति

उत्तर-(1)—(ग)

(2) — (घ)

(3) — (क)

(4) — (ङ)

(5) — (च)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(क) सोवियत राजनीतिक प्रणाली ___________ की विचारधारा पर आधारित थी।

(ख) सोवियत संघ द्वारा बनाया गया सैन्य गठबंधन ___________ था।

© JCERT not to be republished

(ग) ___________ पार्टी का सोवियत राजनीतिक व्यवस्था पर दबदबा था

(घ) ___________ ने 1985 में सोवियत संघ में सुधारों की शुरुआत की।

(ङ) ___________ का गिरना शीत युद्ध के अंत का प्रतीक था।

उत्तर—(क) समाजवाद

(ख) बारसा पैक्ट

(ग)साम्यवादी(कम्युनिस्ट)

(घ) मिखाईल गोरर्बाचेव

(ड) बर्लिन दीवार

प्रश्न 6. सोवियत अर्थव्यवस्था को किसी पूंजीवादी देश जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था से अलग करने वाली तीन विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर—(1) सोवियत अर्थव्यवस्था समाजवादी अर्थव्यवस्था पर आधारित थी।

(2) सोवियत अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में थी।

(3) सोवियत अर्थव्यवस्था में भूमि और अन्य उत्पादक संपदा पर आधारित थी।

प्रश्न 7. किन बातों के कारण गोरवाचेव सोवियत संघ में सुधार के लिए बाध्य हुए?

उत्तर—गोरवाचेव निम्नलिखित कारणों से सोवियत संघ में सुधार के लिए बाध्य हुए?

(1) सोवियत संघ में धीरे-धीरे नौकरशाही का प्रभाव बढ़ता गया तथा पूरी व्यवस्था नौकरशाही के शिकंजे में फँसती चली गई। इसके कारण सोवियत प्रणाली सत्तावादी होती चली गई और लोगों का जीवन कठिन होता चला गया।

(2) सोवियत व्यवस्था में लोकतंत्र एवं विचार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं पाई जाती थी अतः इसमें सुधार की आवश्यकता थी।

(3) सोवियत संघ में एक दल, साम्यवादी दल का प्रभुत्व था यह दल किसी के प्रति उत्तरदाई नहीं था। सोवियत संघ में 15 गणराज्य शामिल थे परंतु प्रत्येक विश्व में रूस का प्रभुत्व था तथा रूस ही सभी प्रकार के निर्णय लेता था इसमें बाकी के गणराज्य स्वयं को अपमानित अनुभव करते थे।

(4) सोवियत संघ ने खतरनाक हथियार बनाकर अमेरिका की बराबरी की परंतु धीरे-धीरे सोवियत संघ को इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। सोवियत संघ ने हथियार बनाने पर अत्यधिक खर्चा किया जिसके कारण सोवियत संघ बुनियादी ढांचे एवं तकनीकी क्षेत्र में पिछड़ता गया।

(5) सोवियत संघ राजनीतिक एवं आर्थिक तौर से पिछड़ गया था जिसके कारण वह अपने नागरिकों की सहायता नहीं कर पा रहा था जिसके कारण सोवियत संघ का विघटन हो गया।

(6) 1979 में अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप के कारण सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था और भी कमजोर हो गई । सोवियत संघ में निर्यात कम होता गया और आयात बढ़ता गया।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 8. भारत जैसे देशों के लिए सोवियत संघ के विघटन के क्या परिणाम हुए?

उत्तर—सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व में अमेरिका की महाशक्ति रह गया। इसके कारण अमेरिका ने भारत जैसे विकासशील देशों को सभी प्रकार से प्रभावित करना शुरू कर दिया। अमेरिका विश्व महाशक्ति थी जिसके कारण भारत जैसे विकासशील देशों की भी यह मजबूरी थी कि वह अपने विकास के लिए अमेरिका के साथ चलें। सोवियत संघ के विघटन से अमेरिका का विकासशील देशों जैसे अफगानिस्तान ईरान एवं इराक में अनावश्यक हस्तक्षेप हद से बढ़ गया। विश्व के महत्वपूर्ण संगठनों पर अमेरिका का प्रभुत्व कायम हो गया जिससे भारत जैसे देशों को इन से मदद लेने के लिए परोक्ष रूप से अमेरिकी नीतियों का ही समर्थन करना पड़ा।

प्रश्न 9. शॉक थेरेपी क्या थी? क्या साम्यवाद से पूंजीवाद की तरफ संक्रमण का यह सबसे बेहतर तरीका था?

उत्तर—सोवियत संघ के पतन के बाद रूस पूर्वी यूरोप तथा मध्य एशिया के देशों में साम्यवादी से पूंजीवादी की ओर संक्रमण के लिए एक विशेष मॉडल अपनाया गया जिसे शॉक थेरेपी कहा जाता है। विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा इस प्रकार की मॉडल को अपनाया गया।

साम्यवाद से पूंजीवाद की ओर संक्रमण के लिए यह बेहतर तरीका नहीं था क्योंकि पूंजीवादी सुधार तुरंत किए जाने की अपेक्षा धीरे-धीरे किए जाने चाहिए थे। एकदम से ही सभी प्रकार के परिवर्तनों को लोगों पर लाद कर उन्हें आघात देना उचित नहीं था

प्रश्न 10. निम्नलिखित कथन के पक्ष या विपक्ष में एक लेख लिखें— दूसरी दुनिया के विघटन के बाद भारत को अपने विदेश नीति बदलनी चाहिए और रूस जैसे परंपरागत मित्र की जगह संयुक्त राज्य अमेरिका से दोस्ती करने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

उत्तर—दूसरी दुनिया के विघटन के बाद भी भारत को अपनी विदेश नीति बदलने की आवश्यकता नहीं है। भारत को अपने मित्र रूस से अच्छे संबंध बनाए रखने चाहिए क्योंकि रूस सदैव भारत की जरूरत पड़ने पर हमेशा मदद करता है। परंतु अमेरिका के विषय में यह बात नहीं कही जा सकती है कि वह आगे चलकर भी भारत का साथ देगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि भारत को अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार अमेरिका से संबंध बनाएं तथा रूस के साथ पहले की तरह ही अच्छे संबंध बनाए रखें।

प्रश्न उत्तर
बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. बोल्शेविक क्रांति कब हुई थी

a. 1916 b. 1917

c. 1918 d. 1919

प्रश्न 2. किसने सोवियत संघ में सुधारों की शुरुआत की?

a. मिखाईल गोर्बाचेव

b. बारिस येल्तसिन

c. बर्जनेव

d. खुश्चेव

© JCERT not to be republished

प्रश्न 3. सोवियत संघ का विघटन कब हुआ?

a. 1990 b. 991

c. 1992 d. 2006

प्रश्न 4. शॉक थेरेपी की शुरुआत कब हुई?

a. 1990 b. 1991

c. 1992 d. 1944

प्रश्न 5. विश्व राजनीति में दूसरी दुनिया के अंतर्गत कौन से देश आते हैं?

a. अमेरिकी देश

b. एशियाई देश

c. सोवियत संघ के देश

d. दक्षिण अमेरिकी देश

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. शॉक थेरेपी से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 7. पेरेस्त्रोईका को स्पष्ट करें?

प्रश्न 8. इतिहास की सबसे बड़ी गराज सेल किसे और क्यों कहा जाता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. सोवियत संघ के विघटन के चार कारण बताएं?

प्रश्न 10. साम्यवादी सोवियत अर्थव्यवस्था तथा पूंजीवादी अमेरिकी अर्थव्यवस्था में चार अंतर बताएं?

© JCERT not to be republished